

अष्टमोऽध्यायः स्वादिगण

इस गण की प्रथम धातु “सु” है। “सु” आदि धातुओं का विवेचन जिस गम में है उसे स्वादिगण कहते हैं। इस गण में धातु और प्रत्यय के मध्य में श्नु (नु) विकरण आता है। जैसे :-

श्रु (शृ) नु + नि = शृणोति

धातुरूप

[श्रु] = सुनना
(लट्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

एक व०

द्विव०

बहु व०

(लृट्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

(लोट्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

(लङ्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

(विधिलङ्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

(लृट्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

(लोट्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

(लङ्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

[शक्] = सकना
(लट्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

एक व०

द्विव०

बहु व०

(लृट्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

(लोट्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

(लङ्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

(विधिलङ्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

(लृट्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

(लोट्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

(लङ्)

एक व०

द्विव०

बहु व०

प्र० पु०

म० पु०

उ० पु०

प्र० पु०

म० पु०

उ० पु०

प्र० पु०

म० पु०

उ० पु०

प्र० पु०

म० पु०

उ० पु०

प्र० पु०

म० पु०

उ० पु०

प्र० पु०

म० पु०

उ० पु०

प्र० पु०

म० पु०

उ० पु०

प्र० पु०

म० पु०

उ० पु०

तदनरूप-धातुरूप

धातु

अर्थ

लट्

लृट्

लोट्

लङ्

विधिलिङ्

प्र - आप्

चि

क्षि

धु

वृ

पाना

चुनना

कम होना

काँपना

वरना

प्राप्नोति

चिनोति

क्षिणोति

धुनोति

वृणोति

प्राप्स्यति

चेप्स्यति

क्षेप्स्यति

धविष्यति

वरिष्यति

प्राप्नोतु

चिनोतु

क्षिणोतु

धुनोतु

वृणोतु

प्राप्तेत्

अचिनोत्

अक्षिणोत्

अधुनोत्

अवृणोत्

प्राप्नुयात्

चिनुयात्

क्षिणुयात्

धुनुयात्

वृणुयात्

नोट :- (श्रु) धातु भ्वादिगण ही है, परन्तु इसमें रूप स्वादिगण के समान चलते हैं।

संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. वे उद्योग से सब कुछ प्राप्त करते हैं।

2. परिश्रम के बिना सुख प्राप्त नहीं होगा।
3. तेज हवा से वृक्ष हिल रहे हैं।
4. दुष्ट लोग गुरु के उपदेश को नहीं सुनते।
5. स्वयंवर में सीता ने राम का वरण किया।
6. भारत शेर के दाँत गिन सकता था।
7. माली बाग में फूल चुन रहा था।
8. चन्द्रापीड़ ने शुकनास के उपदेश को सुना।
9. सत्संग से दुर्गुण कम होते हैं।
- 10 समय से पाँच मिनट पहले जाकर आचार्य के भाषण को सुनो।

तुदादिगण

इस गण की प्रथम धातु “तुद्” है। “तुद्” आदि धातुओं का वर्णन जिस में है उसे तुदादिगण कहते हैं। इस गण में धातु और प्रत्यय के मध्य श (अ) विकरण आता है। जैसे :-

तुद् + अ + त = तुदति।

परस्मैपदी धातु रूप

[तुद्] = पीड़ा होना
(लट्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०	एक व०
प्र० पु०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति	इच्छति
म० पु०	तुदसि	तुदथः	तुदथ	इच्छसि
उ० पु०	तुदामि	तुदावः	तुदामः	इच्छामि

(लृट्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०	एक व०
प्र० पु०	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति	एषिष्यति
म० पु०	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ	एषिष्यसि
उ० पु०	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः	एषिष्यामि

(लोट्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०	एक व०
प्र० पु०	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु	इच्छतु
म० पु०	तुद	तुदतम्	तुदत	इच्छ
उ० पु०	तुदानि	तुदाव	तुदाम	इच्छानि

(लङ्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०	एक व०
प्र० पु०	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्	ऐच्छत्
म० पु०	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत	ऐच्छः
उ० पु०	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम	ऐच्छम्

(विधिलिङ्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०	एक व०
प्र० पु०	तुदेत	तुदेताम्	तुदेयुः	इच्छेतु
म० पु०	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत	इच्छेः
उ० पु०	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम	इच्छेयम्

[इष्] = (इच्छ्) = चाहना
(लट्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०
प्र० पु०	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
म० पु०	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उ० पु०	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

(लृट्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०
प्र० पु०	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
म० पु०	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उ० पु०	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

(लोट्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०
प्र० पु०	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
म० पु०	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उ० पु०	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

(लङ्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०
प्र० पु०	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
म० पु०	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उ० पु०	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

(विधिलिङ्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०
प्र० पु०	इच्छेतु	इच्छेताम्	इच्छेयुः
म० पु०	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उ० पु०	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

अनुरूप धातुरूप

धातु	अर्थ	लट्	लृट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
क्षिप्	फेंकना	क्षिपति	क्षेप्यति	क्षिपतु	अक्षिपत्	क्षिपेत्
कृत् (कृन्त)	काटना	कृन्तति	कर्तिष्यति	कृन्ततु	अकृन्तत्	कृन्तेत्

प्रच्छ् (पृच्छ्)	पूछना	पृच्छति	प्रक्ष्यति	पृच्छतु	अपृच्छत्	पृच्छेत्
मिल्	मिलना	मिलति	मिलिष्यति	मिलतु	अमिलत्	मिलेत्
मुच् (मुञ्च)	छोड़ना	मुञ्चति	मोक्ष्यति	मुञ्चतु	अमुञ्चत्	मुञ्चेत्
प्र-विश्	प्रवेश करना	प्रविशति	प्रक्ष्यति	प्रविशतु	प्रविशत्	प्रविशेत्
विद् (विन्द्)	पाना	विन्तति	वेत्स्यति	विन्दतु	अविन्दत्	विन्देत्
			वेदिष्यति			
लिप् (लिम्प)	लीपता	लिम्पति	लेप्स्यति	लिम्पतु	अलिम्पत्	लिम्पेत्
सिच् (सिञ्च)	सींचना	सिञ्चति	सेक्ष्यति	सिञ्चतु	असिञ्चत्	सिञ्चेत्
स्पृश्	छूना	स्पृशति	स्पृक्ष्यति	स्पृशतु	अस्पृशत्	स्पृशेत्
			स्प्रक्ष्यति			
लिख	लिखना	लिखति	लेखिष्यति	लिखतु	अलिखत्	लिखेत्

आत्मनेदी धातुरूप :- (लृट् लकार परस्मैपद का होता है)

[मृ - प्रिय] = मरना

(लट्)

	एक व०	द्विव०	बहुव०	एक व०	द्विव०	बहुव०
प्र० पु०	प्रियते	प्रियेते	प्रियन्ते	प्रियष्यते	प्रियष्येते	प्रियष्यन्ते
म० पु०	प्रियसे	प्रियेथे	प्रियेध्वे	प्रियष्यसे	प्रियष्येथे	प्रियष्यध्वे
उ० पु०	प्रिये	प्रियावहे	प्रियामहे	प्रियष्ये	प्रियष्यावहे	प्रियष्यामहे

(लोट्)

	एक व०	द्विव०	बहुव०	एक व०	द्विव०	बहुव०
प्र० पु०	प्रियताम्	प्रियेताम्	प्रियन्ताम्	अप्रियत	अप्रियेताम्	अप्रियन्त
म० पु०	प्रियस्व	प्रियेथाम्	प्रियध्वम्	अप्रियथाः	अप्रियेथाम्	अप्रियध्वम्
उ० पु०	प्रिये	प्रियावहै	प्रियामहै	अप्रियै	अप्रियावहि	अप्रियामहि

(विधिलिङ्)

	एक व०	द्विव०	बहुव०
प्र० पु०	प्रियेत	प्रियेयाताम्	प्रियेरन्
म० पु०	प्रियेथाः	प्रियेयाथाम्	प्रियेध्वम्
उ० पु०	प्रियेय	प्रियेवहि	प्रियेमहि

अनुरूप धातुरूप

धातु	अर्थ	लट्	लृट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
आ-दृ (द्रिय)	आदर करना	आद्रियते	आदरिष्यते	आद्रियताम्	आद्रियत्	आद्रियेत्

संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. अच्छे बालक माता-पिता को दुःखी नहीं करते।
2. ऋषियों के कहने पर उसने हिरण छोड़ दिया।
3. राम और श्याम ने अपने मित्रों को पत्र लिखे।
4. आत्मा कभी भी नहीं मरती, मरता तो शरीर है।
5. चोर घर में घुस गया।
6. शकुन्तला ने अपने बाग के पेड़ सींचे।
7. मैं चाहता हूँ कि वह कक्षा में प्रथम-स्थान प्राप्त करें।
8. दीपमाला आने पर माताएँ घरों को लौटती हैं।
9. वह वृक्ष को अपनी तेज कुल्हाड़ी से काटता है।
10. जो परिश्रम करेगा उसे ही सुख मिलेगा।